औरतों के मु त अ़ल्लिक़ हदीसें

(1) हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रत अस्मा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से फरमाया कि औ़रत जब बालिग़ हो जाए तो उस के जिस्म का कोई हिस्सा सवाए चेहरा और हथेलियों के नज़र न आए।(अबू दाउद शरीफ)

(2) वह औ़रत जो बन संवर कर इतरा इतरा कर, नामहरम मरदों में चलती है वह क़यामत के दिन मुजस्सम तारीकी की मिस्ल होगी जहां रोशनी की कोई किरन तक न होगी। (तिर्मिज़ी शरीफ)

(3) जब कोई मर्द ग़ैर औ़रत के साथ तन्हाई में होता है वहां तीसरा शैतान ज़रुर होता है। (तिर्मिज़ी शरीफ)

(4) बिला उज़्र शरई ना महरम को देखने वाले पर और जिसे देखा जाये उस पर भी (अगर वह क़स्दन दिखाए—यअ़नी जान बूझ कर दिखाए) दोनों पर अल्लाह की लअ़नत है। (मिशकात शरीफ)

(5) जब तुम में से कोई किसी औ़रत को निकाह़ का पैग़ाम भेजने लगे तो अगर उस को देखना मुम्किन हो तो ज़रुर देख ले।(अबू दाउद शरीफ)

(6) औ़रत परदे में रहने की चीज़ है जिस वक़्त वह बे परदह हो कर बाहर निकलती है तो शैतान उस को झांक झांक कर देखता है (मिशकात शरीफ, तिर्मिज़ी शरीफ)

(7) जिस ने ह़राम से अपनी आंखों को पुर किया उस की आंखों में जहन्नम की आग भर दी जायेगी।(कीमियाए सआ़दत)

(8) ह़या जिस चीज़ में हो उस को संवार देती है और जिस से निकाल ली जाए उसे अ़ैब दार कर देती है।(हिजाबुन्निसा)

(9) ह़या और ईमान दोनों आपस में साथ साथ हैं जब उन में से एक उठ जाये तो दूसरा भी जाता रहता है।(हिजाबुन्निसा)

(10) औ़रतों को घरों में रहने की आ़दत डालो।(अह़याउल उलूम)

(11) देवर मौत है औ़रत को देवर से इसी त़रह़ दूर भागना चाहिए जिस त़रह़ लोग मौत से भाबते हैं।(मिशकात शरीफ)

(12) मौला तआ़ला से ज़्यादा कोई ग़ैरत मन्द नहीं इस लिए उस ने ज़ाहिरी व पोशीदा हर क़िस्म की बे ह़याई को ह़राम फरामा दिया ।(बखारी व मुस्लिम)

(13) मेरी उम्मत की औ़रतों का बेहतरीन काम मरदों से यकसूई और उन से इलाहिदा रहना है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

(14) न इख्तेलात करे कोई औ़रत दूसरी औ़रत से फिर अपने खाविन्द से उस की तअ़रीफ यूं करे गोया वह उसे देख रहा हो।(बखारी व मुस्लिम)

(15) औ़रत का अपने घर के अन्दर नमाज़ पढ़ना सेह़न में नमाज़ पढ़ने से बेहतर है और उस को तह ख़ाने (बन्द कमरे) में नमाज़ पढ़ना घर के अन्दर नमाज़ पढ़ने से

(16) जो औ़रत खुशबू लगा कर मरदों के पास से गुज़रे ताकि लोग उस की खुशबू सूंघें तो वह बद चलन है। (निसाई शरीफ) औ़रत को खुले अस्मान के नीचे नमाज़ पढ़ना मना है। (निसाई शरीफ)

(17) अस्हाबे रसूल अपनी दीवारों के सूराख और दरवाज़ों को बन्द कर देते कि औ़रतें ग़ैर मरदों को न झांकें।(अह़याउल उलूम)

(18) जो औ़रत अल्लाह त़आ़ला और यौमे आखिरत पर ईमान रखती हो उस के लिए जाइज़ नहीं कि वह तीन रातों की मुसाफत का सफर मह़रम के बग़ैर कर (रावी हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु अ़न्ह)

(19) जब किसी मुसलमान की निगाह किसी ह़सीन व जीमल औ़रत पर पड़े और वह फौरन अपनी निगाह फेरले तो अल्लाह तआ़ला उस की इबादत में लज़्ज़त व चाशनी पैदा फरमा देता है।

(20) ज़नानों को अपने घर से निकाल बाहर करो।(इब्ने माजा शरीफ)

(21) ना मह़रम को शहवत से देखना आंख का ज़िना है शहवानी बातें सुनना कान का ज़िना है शहवानी बातें करना ज़बान का ज़िना है ग़ैर मह़रम का छूना और पकड़ना हाथ का ज़िना है उस की त़रफ
चलना पैर का ज़िना है और ऐसी बुरी ख्वाहिश दिल का ज़िना है और शरमगाह उसे सच्चा या झूठा कर देती है। (मुस्लिम शरीफ)

(22) हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा और हज़रत मैमूना रदियल्लाहु अन्हुन हुजूर अकरम सल्लल्लाह तआ़ला अलैहि वसल्लम की खिदमते अक़्दस में मौजूद थीं कि हज़रत अब्दुल्लाह मक्तूम ने जो कि ना बीना सहाबी हैं अन्दर आने की इजाज़त चाही तो हुजूर अक़्दस सल्लल्लाहु अ़्यलैहि वसल्लम ने अपनी
अज़वाज (बीवियों) मुतहहरात को परदह का हुक्म फरमाया तो ह़ज़रत उम्मे सलमा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह यह तो नाबीना सहाबी हैं हमें नहीं देख सकते, तो सरकार ने फरमाया कि क्या तुम भी नहीं देख सकते ।(अबू दाउद शरीफ, तिर्मिज़ी शरीफ)

(23) ग़ैरते ईमान की अ़लामत है और बे ग़ैरती निफाक़ की निशानी है।(बेह़क़ी शरीफ)

(24) अगर अचानक किसी अजनबी औ़रत पर नज़र पड़ जाये तो दोबारा उस पर नज़र न डालो।

(25) (मरदों को तम्बीह की गई है कि) रास्ते में चलते हुए दो औ़रतें खड़ी हों या जारही हों तो उन के बीच में से न गुज़रें । (तक़्रीबते नासूर)

(26) एक मरतबा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रदियल्लाहु अन्हा के पास उन की भतीजी आईं उन की ओढ़नी चादर बारीक थी आप रदियल्लाहु अन्हा ने वह फाड़ दी।

(27) दोज़खियों में दो गिरोह हैं उन में एक उन औ़रतों का है जो बज़ाहिर तो कपड़े पहनती हैं मगर हक़ीक़त में बरहना (नंगी) हैं यअ़नी इस क़दर बारीक और ऐसी लापरवाही से कपड़े पहेनती हैं कि उन का बदन चमकता है मज़ीद इरशाद फरमाया कि यह औ़रतें हागिज़ जन्नत में दाखिल न होंगी और जन्नत की खुशबू न पायेंगी (हालांकि जन्नत की खुशबू बहुत दूर दूर तक महसूस होगी) (मिशकात शरीफ जिल्द दो सुन्नी बहश्ती ज़ेवर)

(28) औ़रत जब पांचों नमाज़ें अदा करती हैं रमज़ाल के रोज़े रखती है अपनी अ़स्मत की हिफाज़त करती है और अपने शौहर की फरमांबरदारी करती है तो क़्यामत के दिन उस से कहा जायेगा कि जन्नत के जिस दरवाज़े से चाहे दाखिल होजा ।(सही मुस्लिम शरीफ)

(29) अल्लाह तआ़ला उस क़ौम की दआ़ क़बूल नहीं करता जिस की औ़रतें (झांझन) बजने वाला ज़ेवर पहनती हों।

(30) फाहेशा और बदनाम क़िस्म की आबरु बाख्ता औ़रतें भी अगरचेकि मुसलमान हों पारसा औ़रतों में न आने पायें कि उन से फितना और शदीद तर है।

(31) हया ईमान का हिस्सा है।

(32) अगर घर में मां हो तो भी इजाज़त तलब करो।मूता व इमाम मालिक)

(33) औ़रतों के पास जाने से बचो, एक शख्स ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम देवर से मु त अल्लिक़ क्या हुक्म है फरमाया कि मौत है यअ़नी देवर के सामने होना गोया मौत का सामना है

(34) हया से सिर्फ भलाई ही फेलती है।(बुखरी व मुस्लिम)

(35) नमाज़ बे हयाई से रोकती है ।

(नमाज़ की पाबन्दी से परदह की अहमियत का एहसास बेदार रहता है कि जब अल्लाह तआ़ला के सामने बा परदह जाना है तो बन्दों के सामने बे परदगी क्यों करें)बेहतर है। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

तर्तीब व तालीफ

मुहम्मद अब्दुर्रहीम खान क़ादरी जमदा शाही

ज़िला बस्ती यू पी 272002

खतीब व इमाम जामा मस्जिद दमुआ

ज़िला छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश) 480555

मोबाइल नम्बरः 7415066579

email - khanjamdashahi@gmail.com

www.jamdashahi.blogspot.com

www.issuu.com/abdurrahimkhan